Indian J. Soc. & Pol. 10 (01) : 125-128: 2023 **ISSN : 2348-0084 (PRINT)**
First Published Online 31 JANUARY 2023 **ISSN: 2455-2127 (ONLINE)**

21वीं सदी में भारत–जापान सम्बन्ध : बदलते आयामों का विश्लेषण

अम्बेश्वरी कुमार पाण्डेय[1], पंकज कुमार[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय बहुआ देहात, फतेहपुर, उ0प्र0, भारत
[2]प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

भारत–जापान सम्बन्ध पारम्परिक रूप से मजबूत रहे हैं. भारत एवं जापान दोनों देश अध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक सोच में समानता के साथ–साथ लोकतंत्र, वैयक्तिक स्वतंत्रता तथा कानून के शासन में विश्वास रखने वाले रहे है दोनों देश ईसा से छठवी शताब्दी पूर्व से बौध्द धर्म के माध्यम से एक–दूसरे के करीब आ गये थे भारत की आजादी के बाद 1952 में दोनों देश देशों के मध्य औपचारिक सम्बन्धो की शुरुआत हुई तथा सम्बन्ध मजबूत दिशा में आगे बढ़े। तथापि अगले दशकों में शीतयुध्द की राजनीति ने भारत–जापान सम्बन्धों को प्रभावित किया।परमाणु अप्रसार को लेकर दोनों देशों ने विरोधी नीतियों का अनुसरण किया जिससे सम्बन्ध प्रभावित हुए। नब्बे के दशक में भारत द्वारा उदारीकरण की नीतियों के अपनाने से दोनों देशों के मध्य आर्थिक सम्बन्ध बढ़ें। भारत एवं जापान दोनों की अर्थव्यवस्थाए एक दूसरे की पूरक हैं। और भारत एवं जापान मध्य सेपा समझौता हो चुका है। 21वी सदी में हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में चीन का बढ़ता वर्चस्व दोनों देशों के लिये समान सुरक्षा चिंताए उत्पन्न करता है, चीन, स्ट्रिंग आफ पर्ल्स के माध्यम से हिन्द महासागर में घेरने का प्रयास कर रहा है तथा वन बेल्ट वन रोड के माध्यम से दक्षिण चीन सागर समेत पूरे हिन्द–प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र पर अपना वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास कर रहा है. भारत एवं जापान दोनों स्वतंत्र, मुक्त एवं नियम आधारित हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र के लिये आपस में सहयोग कर रहे है। भारत एवं जापान के मध्य'विशेष सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी ''का समझौता हो चुका ळें भारत–जापान अमेरिका मिलकर मालाबार नौसैन्य अभ्यास में भाग ले रहे है। तथा भारत एवं जापान मिलकर एशिया–अफ्रीका ग्रोथ कारिडोर प्रोजेक्ट पर काम कर रहे है।प्रस्तुत शोधपत्र का प्रमुख उद्देश्य भारत–जापान सम्बन्ध के बदलते आयाम का विश्लेषण करना है।

KEYWORDS. *भारत, जापान, सामरिक सहयोग, आर्थिक सम्बन्ध, आधारभूत संरचना*

भारत एवं जापान के मध्य मैत्री का एक लंबा इतिहास है जो आध्यात्मिक सोच में समानता तथा मजबूत सांस्कृतिक एवं सभ्यता गत रिश्तों पर आधारित है दोनों आधुनिक देशों ने पुराने संबंध की सकारात्मक विरासत को जारी रखा है जो लोकतंत्र, व्यक्तिगत आजादी तथा कानून के शासन में विश्वास के साझे मूल्यों से सुदृढ़ हुआ है वर्षों से दोनों देशों ने इन मूल्यों को सुदृढ़ किया है तथा सिध्दान्त एवं व्यवहार दोनों के आधार पर एक साझेदारी का निर्माण किया है।

1952 से प्रारंभ औपचारिक संबंधों के पूर्व भारत व जापान के बीच एक दूसरे के करीब आने का लंबा इतिहास रहा है ईसा से छठवीं शताब्दी पूर्व जापान में बौद्ध धर्म के प्रसार के माध्यम से दोनों देश पहली बार एक दूसरे के निकट आए बौद्धिक रूप से दोनों देश तन्शिन ओकुहारा व रविंद्र नाथ टैगोर के रचनाओं के माध्यम से पास आए क्योंकि यह दोनों लेखक एशिया की एकता के पक्षधर थे।(खान, 2017 पृ0 10–11) राजनीतिक रूप से 1905 में रूस पर जापान की विजय ने भारत के स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरणा दी रासबिहारी बोस ने 1924 में भारत स्वतंत्रता लीग की जापान में स्थापना की सुभाष चंद्र बोस ने भी सिंगापुर में आजाद हिंद फौज की स्थापना जापान सरकार की मदद से ही की द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत ने सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग नहीं लिया, परंतु जापान की संप्रभुता के पूरी तरह बहाल होने के बाद 1952 में जापान में अलग से शांति संधि की जो द्विपक्षीय संबंधों में एक निर्णायक क्षण था तथा भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया युद्ध अपराध अधिकरण में राधा विनोद पाल की असहमति व्यक्त करने वाली अकेली आवाज ने जापान की जनता के बीच गहरा सद्भाव उत्पन्न किया जो आज भी सुनाई देती है।

राजनयिक संबंधों की स्थापना के पहले दशक के दौरान ही भारत जापान संबंध मजबूत हो गए 1956 में भारत के उपराष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने जापान की यात्रा की मई 1957 में जापान के प्रधानमंत्री नोबुसुकी किशी ने भारत की यात्रा की अक्टूबर 1957 में भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने जापान की यात्रा की यात्राओं का यह सिलसिला बाद में चलता रहा इस प्रकार से दोनों देशों के निर्णायको के मध्य एक आपसी विश्वास एवं सूझबूझ का वातावरण तैयार हो गया इस बढ़ती हुई समझ के बाद के वर्षों में सफल प्रभाव देखने को मिले 4 फरवरी 1958 को दोनों देशों के मध्य एक व्यापारिक समझौते पर हस्ताक्षर हुए जिसके अंतर्गत एक दूसरे को अति विशिष्ट राष्ट्र का दर्जा प्रदान किया गया 1958 में एक अन्य समझौते द्वारा जापान ने भारत को 18 बिलियन येन का कर्जा भी उपलब्ध कराया इस संदर्भ में जापान से कर्ज प्राप्त करने वाला भारत पहला देश बन गया। (Ministry of Foreign Affairs of Japan 1958) इसके माध्यम से भारत द्वारा जापान से पूंजीगत सामान एवं मशीनरी आयात करना संभव हो गया प्रथम दशक में राजनीतिक सद्भावना के विकास के साथ–साथ मजबूत आर्थिक संबंधों का विकास हुआ तथापि अगले दशकों में विपक्षी संबंधों की गति बहुत हद तक कायम नहीं रही काफी हद तक प्रचलित शीत युद्ध ने भी दोनों देशों के रिश्तो को

1: Corresponding Author

प्रभावित किया यह इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि 1961 में प्रधानमंत्री हयातो इकिडा की भारत यात्रा के बाद प्रधानमंत्री स्तर की अगली यात्रा 1984 में यसुहिरो नाकासों द्वारा की गई भारत की ओर से प्रधानमंत्री स्तर की यात्राओं में श्रीमती इंदिरा गांधी 1969 एवं 1982, राजीव गांधी 1985 एवं 1987 तथा पीवी नरसिम्हा राव 1992 की यात्राएं शामिल है।

परमाणु अप्रसार को लेकर दोनों देशों ने विरोधी नीतियों का अनुसरण किया जापान में परमाणु अप्रसार संधि एनपीटी पर 1970 में ही हस्ताक्षर कर दिए थे जबकि भारत ने 1974 में शांतिपूर्ण उद्देश्य हेतु पोखरण प्रथम का विस्फोट किया तब जापान ने बड़ी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की 80 के दशक के पूर्वार्ध में भारत और जापान के बीच एक महत्वपूर्ण एवं सबसे सफल भारत जापान आर्थिक सहयोग से जुड़ा भारत में कार उत्पादन हेतु सुजुकी मारुति समझौता संपन्न हुआ इन्हीं घटनाक्रमों के समानांतर 1985 में जापान आसियान देशों के साथ प्लाजा समझौते पर हस्ताक्षर किए इसके अंतर्गत अब जापान की कंपनियां केवल आसियान देशों के लिए ही नहीं अपितु अन्य विदेशी बाजारों के लिए भी उत्पादन करेंगी इस संदर्भ में भारत एक लाभकारी बाजार के रूप में नजर आने लगा लगभग इसी समय भारत भी अपने यहां आर्थिक उदारीकरण कार्यक्रम लागू करने की योजना बना रहा था इसके परिणाम स्वरूप दोनों देशों के बीच आर्थिक गतिविधियों के सभी प्रमुख क्षेत्रों आर्थिक सहायता, व्यापार, पूंजी निवेश, संयुक्त उद्यम आज में सुधार हुआ 1991 के भारत के भुगतान संतुलन संकट के समाधान में जापान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इसी समय भारत में आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाया तथा लुक ईस्ट पॉलिसी के माध्यम से भारत का जापान एवं आसियान देशों के साथ संबंध बढ़ा भारत द्वारा 1998 में परमाणु परीक्षण के पश्चात भारत जापान संबंध बहुत ही निम्न स्तर पर पहुंच गया और जापान ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए।

21वींसदी के प्रारंभ में भारत अमेरिकी संबंधों में सुधार हुआ जिसने भारत जापान संबंध सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव डाला जापानी प्रधानमंत्री योसिरो मोरी की अगस्त 2000 की भारत यात्रा से भारत जापान संबंध प्रगाढ़ता की ओर बढ़े और भारत जापान के मध्य ''इक्कीसवीं शताब्दी में भारत जापान के मध्य वैश्विक साझेदारी'' नामक समझौते से सामरिक संबंधों की शुरुआत हुई। (माथुर, 2015 पृ025) 21वीं शताब्दी में चीन का आर्थिक महाशक्ति के रूप में उदय तथा इसके फलस्वरूप चीन की रक्षा आधुनिकीकरण भारत और जापान दोनों के लिए समान चिंताएं प्रस्तुत करता है क्योंकि दोनों देशों का चीन से सीमा विवाद है तथा चीन हिंद–प्रशांत क्षेत्र में मलक्का दुविधा के कारण समुद्री संचरण मार्ग पर प्रभाव बढ़ाने का प्रयास कर रहा है साथ ही हिंद महासागर में मोतियों की माला स्ट्रिंग आफ पर्ल्स की नीति के माध्यम से भारत को घेर रहा है इसके अंतर्गत पाकिस्तान में ग्वादर बंदरगाह, बांग्लादेश में चटगांव बंदरगाह, श्रीलंका में हंबनटोटा बंदरगाह तथा म्यांमार में क्योक्प्यु बंदरगाह का निर्माण एवं विकास कार्य कर रहा है जिसका प्रयोग व्यापार एवं अन्य सामाजिक उद्देश्यों के लिए करना चाहता है चीन समुद्री सिल्क रोड मैरिटाइम सिल्क रोड के माध्यम से हिंद महासागर क्षेत्र से लेकर मध्य पूर्व अफ्रीका, यूरोप तक अपनी शक्ति बढ़ा रहा है चीन पूर्वी चीन सागर में जापान के विवादित सेंकाकू द्वीप पर प्रभाव बढ़ा रहा है तथा दक्षिण चीन सागर में अपनी नौसैन्य शक्ति बढ़ा रहा है जिसको अंतराष्ट्रीय न्यायाधिकरण ने अवैध करार दिया है परंतु चीन इस निर्णय को मानने से इंकार कर रहा है जिस कारण उसका आसियान देशों से विवाद है जिससे जापान का हित प्रभावित हो रहा है क्योंकि जापान इसी मार्ग से मध्य पूर्व, अफ्रीका एवं यूरोप से जुड़ता है।

21वी सदी में भारत और जापान के आर्थिक संबंधों में मजबूती के साथ–साथ सामरिक संबंध भी अत्यधिक प्रगाढ़ हुए हैं भारत एवं जापान के तटरक्षक बल कोस्ट गार्ड के मध्य संयुक्त द्विपक्षीय अभ्यास की श्रृंखला नवंबर 2000 में प्रारंभ हुई यह संयुक्त नौसैन्य अभ्यास सहयोग– काईजिन नाम से जाना जाता है इस सैन्य अभ्यास का 15 वा संस्करण 11 से 16 जनवरी 2016 के दौरान चेन्नई तट के निकट बंगाल की खाड़ी में संपन्न हुआ यह अभ्यास समुद्री संचरण मार्ग की स्वतंत्र नौवहन सुनिश्चित करने समुद्री मार्ग को आतंकवाद एवं डकैती से मुक्ति के लिए संपन्न हुआ। (दी हिन्दू, 15 जनवरी, 2016) भारत एवं जापान के मध्य 2005 में ''भारत जापान साझेदारी नए एशियाई युग में सामरिक निर्देशन'' जारी हुआ भारत एवं जापान के मध्य 2006 में ''भारत जापान के बीच सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी'' नामक समझौता हुआ और क्षेत्रीय एवं वैश्विक मुद्दों पर सहयोग तथा रक्षा सम्बन्ध मजबूत कर इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता के लिए सहयोग की बात की गई तथा प्रत्येक वर्ष शिखर सम्मेलन का निर्णय लिया गया हिंद प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में भारत एवं अमेरिका के बीच 1992 से ही मालाबार तट पर नौसैन्य अभ्यास होता है जापान इसमें सन 2007, 2009, 2011 में 2014 में अस्थाई रूप से भाग लिया था सन 2015 में इसके 19 में संस्करण से जापान स्थाई सदस्य के रूप में शामिल हो गया भारत एवं जापान के मध्य 2008 में ''भारत जापान सुरक्षा सहयोग पर संयुक्त घोषणा पत्र ''जारी हुआ और सुरक्षा संबंधी विस्तृत करने का निर्णय किया तथा रक्षा तकनीक पर आधारित संबंध बढ़ाने पर जोर दिया गया भारत और जापान के मध्य 2014 में ''भारत जापान विशेष सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी पर टोक्यो घोषणा पत्र'' जारी हुआ इसमें रक्षा उपकरण एवं तकनीकी के स्थानांतरण की बात की गई तथा आतंकवाद समुद्री सुरक्षा तथा साइबर सुरक्षा पर सहयोग बढ़ाने की बात की गई।

''भारत जापान के मध्य 2015 में भारत जापान विजन 2025 विशेष सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी विश्व एवं हिंद–प्रशांत क्षेत्र में शांति और समृद्धि के लिए सहयोग पर संयुक्त वक्तव्य'' जारी हुआ जिसमें दोनों देशों ने भारत जापान विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी को एक गहरी व्यापक आधारित और एक्शन उन्मुख साझेदारी में बदलने का संकल्प लिया जो उनके दीर्घकालिक राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक लक्ष्यों के व्यापक अभिसरण को दर्शाता है भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी 2014 के अपनाने से हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में भारत जापान सम्बन्ध और प्रगाढ़ होने की संभावना है एक्ट ईस्ट पॉलिसी से भारत और जापान के बीच एक्शन आधारित जुड़ाव बढ़ रहा है भारत एवं जापान के मध्य आर्थिक संबंध भी नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर है इसी दिशा में भारत एवं जापान के मध्य 2011 में ''व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता'' हुआ यह समझौता सीमा शुल्क में कमी लाने के लिए किया गया जिसके

अंतर्गत 10 वर्ष में भारत, जापान से आयात पर लगभग 94 प्रतिशत तक सीमा शुल्क खत्म करेगा और जापान, भारत से आयात पर 97 प्रतिशत तक सीमा शुल्क खत्म करेगा भारत जापान सेपा समझौता से दोनों देशों के मध्य दवा, कृषि, वस्त्र, आभूषण, रसायन, पेट्रोलियम और सीमेंट उद्योगों को निवेश में बढ़ावा मिलना है यह समझौता भारत–जापान आर्थिक संबंध में नया आयाम स्थापित करेगा। (Ministry of Foreign Affairs of Japan 2011) भारत–जापान के ''आधिकारिक विकास सहायता'' का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता देश है जिसका प्रयोग आधारभूत संरचना के विकास में हो रहा है जिससे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ने की संभावना है जापान की आधिकारिक विकास सहायता भारत के गरीबी उन्मूलन प्रयासों, आर्थिक एवं सामाजिक आधारभूत संरचनाओं विकास तथा मानव संसाधन के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है जापान ने दिल्ली की महत्वपूर्ण मेट्रो परियोजना की संकल्पना गढ़ने तथा उसे लागू किए जाने में भारत की मदद की है जापान, दिल्ली–मुंबई औद्योगीक गलियारे के लिए दीर्घकालीन ऋण मुहैया करा रहा है भारत, एशिया में जापानी निवेशकों के लिए एक पसंदीदा लक्ष्य के रूप में उभरा है। भारत और जापान के मध्य दिसंबर 2015 में मुंबई एवं अहमदाबाद के बीच जापान की शिनकानसेन प्रणाली पर आधारित बुलेट ट्रेन निर्माण का समझौता संपन्न हुआ जापान इसके लिए 12 बिलियन डालर का लोन प्रदान करेगा जो 0.1 प्रतिशत के ब्याज पर 50 साल के लिए होगा जापान द्वारा इसके लिए तकनीकी सहयोग तथा प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

नवंबर 2016 में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जापान यात्रा के दौरान भारत जापान के मध्य नागरिक परमाणु समझौता सिविल न्यूक्लियर डील हुआ जिससे भारत एवं जापान नागरिक परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग तथा तकनीक का आदान–प्रदान कर सकेंगे भारत जापान परमाणु समझौता से भारत की विशाल ऊर्जा संसाधनों तक पहुंच हो जाएगी इससे भारत अपने त्वरित विकास को कायम रख सकेगा जापान ने पहली बार किसी ऐसे देश के साथ नागरिक परमाणु समझौता किया है जिसने एनपीटी परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किया है नागरिक उपयोग के लिए पर्यावरण के हिसाब से उचित परमाणु ऊर्जा के विकास पर जापान के साथ हुआ हालिया समझौता एक सही कदम है तथा यह देश की नवीकरणीय ऊर्जा योजनाओं को आगे बढ़ाएगा इस समझौते द्वारा भारत अपने आपूर्तिकर्ताओं में विविधता भी ला सकता है तथा अपना परमाणु ऊर्जा उद्योग विकसित कर सकता है इसके अलावा भारत अपने फास्ट ब्रीडर रिएक्टर में इस्तेमाल के लिए प्लूटोनियम तथा अन्य खर्च होने वाले परमाणु ईंधन प्राप्त कर सकता है भारत एवं जापान, नागरिक परमाणु समझौता सामरिक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है यह समझौता हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में चीनी विस्तार वादी गतिविधियों को संतुलित करने का प्रावधान भी देता है दोनों देश अमेरिका एवं चीन के बीच बदलते शक्ति संतुलन को लेकर भी चिंतित है इन परिस्थितियों में भारत और जापान के बीच सामरिक सम्बन्ध बहुत महत्वपूर्ण है। (केशवन, 2016)

चीन हिंद–प्रशांत क्षेत्र में अपना प्रभुत्व बढ़ाने के लिए वन बेल्ट वन रोड योजना पर काम कर रहा है ओ0बी0ओ0आर0 चीन के प्राचीन सिल्करोड के तर्ज पर बनाया जा रहा है इसीलिए इसे न्यू सिल्क रूट भी कहा जा रहा है इस प्रोजेक्ट का मकसद यूरोप, अफ्रीका और एशिया के कई देशों को सड़क और समुद्र के माध्यम से जोड़ना है चीन के अनुसार सड़क रास्तों से दुनिया के कई देशों को एक साथ जोड़ने से इन देशों के बीच कारोबार को बढ़ाने तथा इंफ्रास्ट्रक्चर मजबूत करने में मदद मिलेगी वन बेल्ट वन रोड प्रोजेक्ट चीन के प्रसिद्ध सिल्क रोड इकोनामिक बेल्ट और 21वीं सदी के समुद्री सिल्करोड का एकीकृत स्वरूप है वन बेल्ट वन रोड परियोजना के तहत चीन छह आर्थिक गलियारे बना रहा है चीन इन आर्थिक गलियारों के जरिए जमीनी और समुद्री परिवहन का जाल बिछा रहा है इससे पूरे क्षेत्र में चीन का वर्चस्व बढ़ेगा जो भारत के लिए सुरक्षा चुनौतियां प्रस्तुत करता है। वन बेल्ट वन रोड प्रोजेक्ट के एक हिस्से चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे का भी भारत विरोध कर रहा है यह पाक अधिकृत कश्मीर के गिलगित–बालटिस्तान से होकर गुजरता है। भारत इसे अपनी संप्रभुता का उल्लंघन बताया है।(सिंह,2019 पृ0 65–77)

चीन के वन बेल्ट वन रोड प्रोजेक्ट के द्वारा इस पूरे क्षेत्र में बढ़ते प्रभाव को प्रतिसंतुलित करने के लिए भारत और जापान मिलकर एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर का विकास किया है। चीन के वन बेल्ट वन रोड परियोजना के विपरीत एशिया अफ्रीका ग्रोथ कारिडोर परियोजना का मुख्य दृष्टिकोण प्राचीन समुद्री मार्गों को फिर से खोजते हुए भारत एवं दक्षिण एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ अफ्रीकी महाद्वीप को जोड़ने वाले नए समुद्र गलियारे को बनाना है जो कि अनिवार्य रूप से भारत और अफ्रीका के अन्य देशों के साथ अफ्रीका को जोड़ने वाला समुद्र गलियारा होगा इसके लिए बंदरगाहों का विकास तथा आपस में जोड़ा जा रहा है चीन बड़ी तेजी से अफ्रीका में विस्तार कर रहा है इसलिए भारत और जापान द्वारा संयुक्त रूप से प्रारंभ एएजीसी विजन एशिया एवं अफ्रीका के संबंधों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। (पाण्डा, 2017,पृ011) निवेश, आधारभूत ढांचे का विकास, परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग समेत द्विपक्षीय,क्षेत्रीय एवं वैयक्तिक स्तर पर भारत जापान सम्बन्ध काफी घनिष्ठ हुए हैं और जापान, भारत के आर्थिक विकास और सुनहरे भविष्य में सहभागी बना है।

वित्तीय वर्ष 2017–18 के दौरान भारत जापान द्विपक्षीय व्यापार 15.71 बिलियन डालर रहा इस दौरान भारत जापान को 4.7 बिलियन डालर का निर्यात किया तथा जापान से 10.7 बिलियन डालर का आयात किया द्विपक्षीय व्यापार में पेट्रोलियम उत्पाद का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा तेल का मूल्य संपूर्ण द्विपक्षीय व्यापार आंकड़े को प्रभावित किया भारत का जापान को निर्यात भारत के कुल निर्यात का 1.5 प्रतिशत था भारत में जापान का निर्यात भारत के कुल आयात का 2.36 प्रतिशत था यह एक बड़ी संभावना को रेखांकित करता है भारत का जापान को प्राथमिक निर्यात पेट्रोलियम उत्पाद, रासायनिक तत्व/यौगिक, मत्स्य, गैर धातु खनिज के बर्तन, धात्विक अयस्क और स्क्रैप, कपड़े और सामान, लोहा इस्पात उत्पादक वस्त्र मशीनरी आदि है जापान से भारत का प्राथमिक आयात मशीनरी, लोहा और इस्पात

उत्पाद, विद्युत मशीनरी, परिवहन उपकरण, रासायनिक तत्व/यौगिक, प्लास्टिक सामग्री, धातुओं के विनिर्माण, अच्छे उपकरण, रबड़ विनिर्मित वस्तुएं, कोयला/कोक आदि है हाल के वर्षों में भारत को सबसे आकर्षक निवेश स्थल में एक के रूप में स्थान दिया है जापानी विनिर्माण कंपनियों के लिए जापान बैंक फॉर इंटरनेशनल कोऑपरेशन द्वारा कराए गए सर्वेक्षण में भारत पिछले कुछ वर्षों में शीर्ष दो स्थान पर रहा भारत में जापानी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हाल के वर्षों में बढ़ा है लेकिन जापान के कुल आउट वर्ड एफडीआई की तुलना में यह अभी भी बहुत कम है भारत में जापानी एफडीआई 2.6 बिलियन डॉलर 4.7 बिलियन डालर और 1.6 बिलियन डालर क्रमशः वित्त वर्ष 2015–16, 2016–17 और 2017–18 में था जापान प्रमुख निवेशकों में तीसरे स्थान पर है भारत में जापानी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश मुख्य रूप से ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रिकल उपकरण, दूरसंचार, रसायन ,वित्तीय बीमा और दवा क्षेत्रों में रहा।

निष्कर्ष

भारत–जापान सम्बन्ध ऐतिहासिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण रहे है दोनों देश लोकतांत्रिक शासन प्रणाली, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक निकटता बौध्द धर्म के कारण आपस में गहराई से जुड़े है आजादी के बाद दोनों देशों के बीच औपचारिक सम्बन्धो की शुरुआत हुई। भारत–जापानी आधिकारिक विकास सहायता का प्रथम प्राप्तकर्ता देश बना, परन्तु शीतयुध्द काल की राजनीति से दोनों देशों के सम्बन्ध प्रभावित हुए तथा परमाणु मुद्दे को लेकर भी दोनों देशों के रिश्ते कमजोर हुए। भारत के द्वारा गुटनिरपेक्षता की नीति अपनायी गयी। नब्बे के दशक में भारत द्वारा आर्थिक उदारीकरण की नीति आपनायी गयी जिससे भारत – जापान आर्थिक सम्बन्धों में सुधार हुआ वर्तमान समय में भारत एवं जापान के मध्य सीइपीए समझौता हो चुका है। वित्तीय वर्ष 2017–18 के दौरान भारत एवं जापान के मध्य द्विपक्षीय व्यापर 15.71 बिलियन डालर रहा है। भारत एवं जापान के बीच होने वाला द्विपक्षीय व्यापर इनके अन्य देशों विशेषतया चीन के साथ होने वाले द्विपक्षीय व्यापर से बहुत कम है। जिसमे सुधार करने की अत्यंत आवश्यकता है, तथा भारत में जापान द्वारा होने वाले प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को भी बढ़ाने की जरूरत है। जापान–भारत के ' मेक इन इण्डिया ' की सफलता के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। 21 वीं सदी में चीन हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में अपना सामरिक वर्चस्व बढ़ा रहा है, जो भारत एवं जापान दोनों देशों के लिए सुरक्षा चिंताए प्रस्तुत करता है, क्योंकि भारत एवं जापान दोनों देश अपना व्यापार और पश्चिम एशियाई देशों से तेल आयात इसी समुद्री संचरण मार्ग से करते है। भारत एवं जापान दोनों देश स्वतंत्र, मुक्त एवं नियम आधारित हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र का समर्थन करते है, इस क्षेत्र में अपने सामरिक सहयोग को बढ़ाने के लिए एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर प्रोजेक्ट पर काम कर रहे है। भारत एवं जापान को अपने सामरिक एवं आर्थिक सहयोग को व्यवहारिक रूप से आगे बढ़ाने आवश्यकता है।

REFERENCES

खान, शमसाद अहमद (2017) *चेंजिंग डायनामिक्स आफ इण्डिया–जापान रिलेशन्स : बुद्धिज्म टू स्पेशल स्ट्रेटजिक पार्टनरशिप,* नई दिल्ली, पेंटागन

केशवन, के वी (2016) इण्डिया–जापान सिविल न्यूक्लियर एग्रीमेंट : डिफरिंग परसेप्शन्स, आब्जर्वर रिसर्च फाउण्डेश https://www.orfonline.org/expert-speak/india-japan-civil-nuclear-agreement-perceptions/ Accessed on 02-12-2022

माथुर, अर्पिता (2012) *इण्डिया–जापान रिलेशन्स, ड्राइवर्स ट्रेण्ड्स एण्ड प्रास्पेक्टस,* सिंगापुर, एस राजारत्नम स्कूल आफ इण्टरनेशनल स्टडीज

मिनिस्ट्री आफ फारेन अफेयर्स आफ जापान (1958) आउटलाइन आफ जापान्स ओडीए टू इण्डिया , टोकियो, https://www.mofa.go.jp/region/asia-paci/india/pmv0504/oda_i.pdfccessed on 02-12-2022

मिनिस्ट्री आफ फारेन अफेयर्स आफ जापान (2011) ओरिजिनल टैक्स्ट आफ दी सेपा बिटवीन जापान एण्ड दी रिपब्लिक आफ इण्डिया, टोकियो, https://www.mofa.go.jp/region/asiapaci/india/epa201102/pdfs/ijcepa_ba_e.pdf Accessed on 02-12-2022

पाण्डा जगन्नाथ पी (2017) एशिया अफ्रीका ग्रोथ कारीडोर : एन इण्डिया–जापान आर्क इन दी मेंकिंग, इन्सिटीच्यूट फार सिक्योरिटी एण्ड डेवलपमेंट पालिसी फोकस इण्डिया https://isdp.eu/publication/asia-africa-growth-corridor- aagc-india-japan/ Accessed on 02-12-2022

सिंह, कवल दीपेन्दर पाल (2019) स्ट्रेन्थ एण्ड चैलेन्जेज आफ ओबीओआर इन्सटीच्यूटः इण्डियन पर्सपेक्टिव, जर्नल आफ नेशनल ला यूनिवर्सटी 6(1) https://doi.org/10.1177/2277401719857865 Accessed on 02-12- 2022

दी हिन्दू (2016) इण्डिया–जापान कंडक्ट ज्वाइंट एक्सरसाइज सहयोग कैजिन आफ चेन्नई कोस्ट, नई दिल्ली, 15 जनवरी